

२३०॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 कर्मकर्मिणः समस्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कश्चिदपि भगवत्पदं गच्छेत् ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ममाभिः समस्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लुप्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २३०॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

३११
 ३११

ASPA ARCHIVES

२३०॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 कर्मकर्मिणः समस्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कश्चिदपि भगवत्पदं गच्छेत् ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ममाभिः समस्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 लुप्तकर्मणः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 २३०॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]

मधुलमा रक्तसंयुतनिर्धोतलददिनं यत्तु त्वत्तिसमायुक्तं पंचवृद्धापध्वरितं गतं संयुक्तवृद्धा-
नां सुनपत्यानुमादनां भो कालो ज्ञापिसहस्रं तं हर्मोतयापदसना ॥ अक्तनिद्रागताध्यातहं कान-
हृदि नो गतं हं कानपविनक्तं सूर्यमधुलसहस्रकानेति निर्जतः ॥ यथा गपुरुः शूनं जं कानपवि-
धार्गखजपधिधानमूर्ध्वकंसर्वसत्त्वार्थहृदुकां विहावयत ॥ विरुजं नत्वमोलिनं नाथपध्वनि-
धाय विरुधिमं अक्षयज्ञानन्यातिकाकसर्वखजतिरुधिकं सूर्यमधुलसमायुक्तं हूलवृद्धां
निर्मलं वागमक्तं नीयो गं यं च मूढापध्वरितं व्याधुतमप्यविधाने ॥ कष्टमालीनिनेष्टुके-
वर्ज्यमभोत्तात्मकं नाथः अटभीयूष्यसन्निहं ॥ निव्यायमानं दंष्ट्रांष्टुं बहुमादरुयानकं ॥ नक्तचक्षु-

दयंवीजं पीडल हटम ४ चिकुरव प्रवा मीराय हसं नाना नलीय । आहिकं ॥ न क ह व मान कं छी च धु मे म
 हा नाम धं रा व य स्थि न चि ह न क्का ३ ह न सं ग य ० ० ० ॥ स स त्वा स वि क य स रं मे हा धा व ना स य म क क
 रु यं म रु ना ज ॥ ॐ व धु महा रा व ध हं ह र्त्वा हा ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ व धु नू य ॥ व ट २ ५ व ट २ क ह २ प रू २ व रू
 प रू २ न य २ ह न २ ग स २ व न्ध २ ज मू य २ क मू य २ मा ह य २ स र्व भ रू धा म ख व न्ध नः क नू र स र्व अ कि नी
 नां ग ह रू क प क पं पि भा व वा धि य द्वा धं ॥ ज ग य २ म व २ मा न य २ नू क व धु नू क ॥ व द २ व धु महा स नः
 स र्वो ह्य य य कि ॐ व धु महा रा व ध हं ह र्त्वा हा ॥ ॐ म रु वा ज स र्व क र्मा धि क रा ति ॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ स य
 म म थ न ॥ ज क ह २ क ह य २ ह र्त्वा हा ॥ ॐ व धु महा स न ग स २ व रू २ र्वा हि २ ग य य २ मा

[illegible]

स्वाहा ॥ ॐ सर्वविद्याधिपतय प्रयत्नकुमकुना नमः सर्वजगदिनीनां ॥ अस्य श्वश्रुं हं हृद ॥ ॐ काला कूला
लवदनः रुसं रुला रुल वज्रसूतः ॥ रुनं रुनयं सर्वमघवाकृष्टिं सुमुखं रुदयं ॥ ४३ ॥ सर्वपा
धिया धाय यं हं हृद ॥ ॐ नमो महा नमो नमो हं हृद ॥ ॥ ॐ मिमकुपटल ॥ ॥ पूर्वोक्तं वना
विधिं प्रकाशना जपमकुदवका कानयागक ॥ नीनं शुभालिका धात्वा अथ वानागरु निविशता
आरुहा वयं उक्तं वदत नमान ॥ १ ॥ कालधीन ननु दाल कथा ॥ गतः जपत्सकुं महा रूप ॥ ४४ ॥ मावहा
वयत्सु कीया वंशवदाल जयत ॥ २ ॥ खदनं विविस्वम नृसुत ॥ ३ ॥ कथा नाल कथा ॥ गधविह नद्यागी
यथ हृदया ॥ ४ ॥ होत्रादि नमः नवगीत वाद्ययस्वनेन ॥ विहं नत्यधेश्वरी नयथा हृदं गंज कथं हृद

[illegible]

वज्रध्वजमीमोलिनं उच्छ्वाकथतः सकृपदसावसंग्रहं नानादिहृदनिगदिमयकार्थयं किं (ध्वज)
कवीननिर्गन्तसांनसंहं गेनयथ अग्निनादस्तकाष्टं हिडनं हिद्येते गिनि ४ रुमनयथा मीत्यरुगा
रुं रुदथे दक लुवीनस्य साधनं राय विरुद्ध किमहा सर्ववीनवीनस्य चर्यया समग्रुदय निपद्य न अ
लमि कि किनर्थे नाम संग्रहं ॥ रुगवानाह ॥ रुदम कं स्वयावीनं रुकथयामि समासक ४ ॥ अकावध
किमाव्याकं वकावध पि किमव्यक्तं ॥ लकावध उ किमव्यक्त कीदृशं संरुक्तं नये वचनं वलं वलं वलं
कम्यन ॥ कपि वलन धाडनामन कार्थत्वात् ॥ नत्वं अकावध ॥ अकाव्यकुस्वयं नित्यं वंगे मनां
कूलं अह्निमायाद नहि रुं ॥ धर्मवकस्वरावमिती राहदवी गकथपति पडित्यात् ॥ यइकं म

[illegible][illegible]

१०

[illegible]

गङ्गानि चतुर्नदीनायकः पश्यन्नात्मा कस्यैव तस्य यांजिद्विधम् ॥ काकनखाद्यकमन्द
ब्रीह्यौ काककूटनीकुञ्जनाखाद्याः ॥ तत्र दहं जाकनरुखावयवचक्षुः ॥ न हासमाहाययति
हृद्दहम् ॥ ॐ तिस्रं काकचंचनां लिखात् ॥ ॐ वरुणमाह ॥ ॥ अथ ॥ तत्र स्थं वक्रजं
कपजं रुमनस्य पद्मे द्विवाजनेनो मरुतकस्य माल्यं अतन्वु ॥ ॐ नवकं ॥ गङ्गा पदपद
धारुणी नहि मरुद्धि गाङ्गा ॥ ॐ त्र्यम्बकस्य नमः ॥ ॐ ओं काकय २ माहाय २ नमः ॥ किवर्गं कूच
खाहा ॥ उदयकीटं संगच्छ ॥ अथ ॥ निकाययत् ॥ अमिताह ॥ अः नामिका न कूनसह
वटिकां हृत्वा पूर्विकमनुधा ॥ तिस्रं खानयानदो हव्यं वध्वं हवति न गीसय ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]

मां कथमप्यास्थितं कथादिभर्षकमाभिः अचलवादिपुमाद न ३५॥ अविनाशकत्वात् नृपधवा
 वगयद्दुःखविवाहदृष्ट्वा ॥ ३६॥ निनिर्बकनवीनयतिरुदाकनसहस्रहिलामनामाहिसन
 यसमाफ २॥ ३७॥ अचलाहिसमपनिदः ॥ ३८॥ निनिर्बकीधिसदावंधेयमाकाशना
 नामिनि ॥ ३९॥ यधमाहउपलावाः रुडनयानिधामरुः रुदयदसोचयानिना ॥ ४०॥ वववादि
 महाधवनः ॥ ४१॥ निरिविगंकापयाहानयाधीवजावाकमशानन्दवाशमनउरुं
 गुरुसन्वह २८॥ निपादगाङ्गासुजायासिद्धयमाश्लु २९॥ ४२॥ ४३॥ उरुं कुया

१३

जा.भा.भरुदाश	311	I
--------------	-----	---

LEARN ARCHIVES